Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
ISSN 2320–7175 | Volume 09, Issue 01, June 2021
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2021
UGC CARE listed Journal

भारतीय संगीत परंपरा में मराठी लोकगीतों का योगदान

Prof. S.Y. Meshram[1], Prof. A.D. Fulzele[2], R. H. Meshram[3]

1 Head, Department of History, R.T.M. Nagpur University, Nagpur, Maharashtra
2 Head, Department of History, Dr. Ambedakar College, Deekshabhoomi, Nagpur, Maharashtra
3 Research Scholar, Department of History, R.T.M. Nagpur University, Nagpur, Maharashtra

शोध सार

किसी भी राष्ट्र का लोकसाहित्य उसकी सांस्कृतिक अस्मिता की पहचान होता है। लोक साहित्य मानव के जीवन का सहज सुंदर प्राकृतिक अविष्कार है। लोकसाहित्य लोक संस्कृति का प्रतिनिधित्व करता है। लोकसाहित्य की एक प्रसिद्ध विधा लोकगीत है। इन लोकगीतों ने सदियों से प्रचलित परंपराएं और धार्मिक विश्वास को बनाए रखा है। मानव जीवन की विकास गाथा को इन मौखिक परंपरा ने भूतकाल से वर्तमान और भविष्य काल तक पहुंचाया है। लोकगीत काव्य और संगीत का सुमधुर मिश्रण होते हैं। जिनमें मनुष्य की संवेदना, मनोवृति का भारतीय संस्कृति में संगीत को एक ऐसा योग समझा जाता है, जो उपासना के रूप में किया जाता। जिसमे कला के माध्यम से मोक्ष की प्राप्ति संभव है। मराठी लोकगीतों में भारतीय संगीत की आध्यात्मिक बैठक स्पष्ट रूप से नजर आती है। सर्वधर्म समभाव तथा आत्मिक उन्नति के लिए संगीत कला की पारंपारिक पद्धति का अवलंबन मराठी लोकसंगीत की विशेषता है। मराठी लोक गीतों को गाने की अपनी स्वतंत्र पद्धति होने के बावजूद मराठी लोकगीतों में रचीबसी संगीत की राष्ट्रीय एकरूपता भारतीय संगीत परंपरा में मराठी लोकगीतों का महत्वपूर्ण योगदान है।

बीज शब्दः मराठी लोकगीत, लोकगीतों की विशेषताएं।

भूमिका

लोकगीतों की मौखिक परंपरा सदियों से लोकजीवन में प्रवाहमान दिखाई देती है। लोकगीतों को लोकमानस की सामुदायिक भावनाओं का अविष्कार कह सकते हैं। इसी कारण यह किसी व्यक्ति विशेष की रचना ना होकर लोकमानस की भावनाओं की स्वर एवं लयात्मक निर्मिती है। लोकगीतों को लोकसाहित्य का आत्मा कहा जाता है। यह लोकगीत मानव की आंतरिक भावना, दुःख, वेदना, आनंदउर्मी, भक्तिभाव से परिपूर्ण होते है। भारतीय संस्कृति विविधांगी है। घाट घाट पर बदलते पानी जैसी वाणी भारतीय संस्कृति की विशेषता है। हर प्रांत की अपनी रूढ़ि- परंपरा, धार्मिक विश्वास है। हर प्रदेश की अपनी समृद्ध लोकसंस्कृति और ऐतिहासिक विशेषताएं हैं। लोकगीतों में सामाजिक, ऐतिहासिक, राजनैतिक, आर्थिक, धार्मिक, व्यावसायिक एवं सांस्कृतिक परिवेश की छाप दिखाई देती है। लोकगीत उस प्रदेश विशेष के लोकजीवन एवं लोकसंस्कृति का दर्पण होते हैं। मौखिक परंपरा से जतन किए हुए इन लोकगीतों में शास्त्रीय संगीत की जड़े विराजमान है। लोकसंगीत की यह सुरीली यात्रा मानव की उत्क्रांति के हर चरण में परिष्कृत होती दिखाई देती है। प्राकृतिक ध्वनियों से प्रेरित होकर शब्द से भाषा तक पहुंचने वाले मानव ने अपनी स्वाभाविक नादप्रियता से अक्षरों को स्वरों में ढाला और संगीत की कला को जन्म दिया।

भारतीय शास्त्रीय संगीत की परंपरा सामवेद के गायन और भरतमुनि के नाट्यशास्त्र से प्रमाणित होती है। मतंगमुनि का बृहदेशी और सारंगदेव का संगीत रत्नाकर ऐतिहासिक दृष्टि से महत्व रखते हैं। जिस प्रकार

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
ISSN 2320–7175 | Volume 09, Issue 01, June 2021
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2021
UGC CARE listed Journal

भारतीय संगीत परंपरा वैदिक युग के सामगान की देन है, उसी प्रकार सामगान लोकसंगीत की उत्पत्ति की भी प्रेरणा है। वैदिक काल में संगीत के मनोरंजनात्मक एवं अध्यात्मिक यह दोनों रूप प्रचलित थे। शास्त्रीय संगीत उच्चकोटि का होने के कारण जनसाधारण को समझने में कठिन होता था। इसी कारण संगीत की दो धाराएं निर्माण हुई। वैदिक काल में अध्यात्मिक संगीत को मार्गी और लोक संगीत को देशी कहा जाता था। बदलते समय के साथ जनसाधारण व्यक्तियों का लोकसंगीत देशी और अग्रणी व्यक्तियों का शास्त्र शुद्ध शास्त्रीय संगीत प्रचलित हुआ। वैदिक काल में यज्ञ विधि समारोह में सादर किए जाने वाले गीतों का स्वरूप लोकगीतात्मक था, ऐसे कहा जाता है।

वेदों में गीतों के लिए गाथा शब्द का प्रयोग मिलता है। लोक साहित्य में लोकगीतों की श्रेणी में विशेष महत्व रखने वाले लोक कथागीत महाकाव्यों पर आधारित गाथा होते हैं। पौराणिक काल के लोकजीवन में लोकगीतों का प्रचलन दिखाई देता है। महाकाव्यों में लोकगीत परंपरा का उल्लेख मिलता है। रामायण तथा महाभारत आज भी गाथा शैली में गाए जाते हैं। वैदिक काल में प्रचलित लोकगीतों की प्राचीनता का प्रमाण वैदिक साहित्य, पुराण साहित्य, महाकाव्य तथा संस्कृत साहित्य के आधार पर पाया जा सकता है। प्राचीन काल से सूत, मगध, भाट, चारण, कुलशिव ऐसी लोकगायकों की परंपरा अस्तित्व में थी। जिन्होंने इस लोकगीतों की परंपरा को संजोकर के रखा था। महाराष्ट्र के ऐतिहासिक पार्श्वभूमि पर लोकगीतों की परंपरा का प्रमाण सम्राट हाल की गाथा सप्तशती, यादव कालीन सोमेश्वर नृपति का मानसोल्लास जैसे ग्रंथ देते हैं। सातवाहन कालीन महाराष्ट्री प्राकृत भाषा से ही मराठी का जन्म हुआ है, जो यादव काल में साहित्यिक दृष्टि से और संपन्न हो गई। संत ज्ञानेश्वर महाराज ने क्लिष्ट संस्कृत में लिखी भगवतगीता का मराठी में अनुवाद किया और यहीं से मराठी संत साहित्य की अप्रतिम यात्रा शुरू हो गई। कृष्ण द्वारा अर्जुन को बताए गए अध्यात्मिक विचारों का निचोड़ संतों की वाणी द्वारा साधारण जनता ने आत्मसात किया और अपने जीवन के कष्टों को भूल कर संगीत के माध्यम से परमात्मा में लीन होने का सहज तरीका अपनाया।

संशोधन प्रविधि

ऐतिहासिक संशोधन पद्धति का अवलंब कर उपलब्ध साहित्य का शास्त्रीय दृष्टि से परीक्षण कर मूल्यांकन किया गया है।

गृहीत तत्व

संगीत की दृष्टि से लोकगीत किसी भी वाद्यवृंद के बिना ह्रदय को छेड़ने वाले स्वाभाविक स्वरों का प्रतिनिधित्व करते हैं। मानव की ह्रदय की संवेदनाओं से निकली प्राकृतिक ध्वनि से सुसज्जित लोकगीत वह संगीत है, जो मानव की सभी कष्टों का निवारण करता है। आनंद के क्षणों में साथी होता है। उत्सव में, संस्कारों में, उपासना विधि में लोकमानस के स्वर को ताल और लय देता है, जो संगीत की परिभाषापूर्ण करता है। लोकसंगीत का भारतीय परंपरा में उल्लेखनीय योगदान है। मराठी लोकसंगीत ने भारतीय संगीत की परंपरा में अपनी अलग पहचान बनाए रखी है। महाराष्ट्रीय संगीत की विशेषताएं उसकी उच्च कोटि को प्रदर्शित करती हैं।

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
ISSN 2320–7175 | Volume 09, Issue 01, June 2021
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2021
UGC CARE listed Journal

महाराष्ट्र की लोकगीत परंपरा

भारत के अन्य प्रांतों की तरह मराठी लोकगीत प्रादेशिकता, गायक, वर्ण व्यवस्था, आयु की अवस्था, समाज जीवन और विधि संस्कारों पर आधारित होते हैं। महाराष्ट्र के लोकगीतों में पुरुषों के गीत, स्त्री गीत तथा बाल गीतध शिशु गीत प्रसिद्ध है। विधियों पर आधारित गीत मुख्यतः 16 संस्कार और वार्षिक त्योहारों के उपलक्ष में गाए जाते हैं। देवताओं पर आधारित उपासना गीत और बदलते ऋतु पर आधारित त्यौहार गीत मराठी संस्कृति की विशेषता है। महाराष्ट्र के लोकगीत प्रकारों में ओवी, भोंडला गीत, भुलाबाई केगाने, मुहूर्त के गीत, कोली गीत, शेतकरी गीत यह काव्य प्रकार आते हैं। मराठी लोकगीतों से ही वासुदेव के गीत, लावणी, पोवाडा, भारूड यह गीत प्रकार विकसित हुए है। मराठी लोकगीतों में स्त्रियों के गीतगानों की संख्या विपुल है। स्त्री गीतों में ओवी यह पद्य प्रकार प्रसिद्ध है। जो जैन कालीन ब्रुहत् कल्पसूत्र भाष्य में लिखित मौखिक ओवीगीत की प्राचीनता (इसवी सन छठा शतक) का प्रमाण देती है। पुरुषों के गीतों में कृषि काम से संबंधित भलरी गान, शक्ति पूजा से संबंधित गोंधळ, महादेव के गीत प्रसिद्ध है। शिशुओं के गीतो में ताल गीत और लोरी गीत उल्लेखनीय है।

भारतीय संगीत की परंपरा में मराठी लोकगीतों की विशेषताएं

मराठी लोकगीतों पर महाराष्ट्र के संत साहित्य का प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। मराठी संतो ने जनजागृति और समाज प्रबोधन के लिए अभंग, भजन कीर्तन जैसे लोक माध्यमों का उपयोग किया। उन्होंने अपने उपदेश अथवा शिक्षा को लोकगीत शैली में गाकर सर्वसाधारण जनता को एकसंघ किया। वर्ण व्यवस्था के कठोर बंधनों से ग्रस्त समाज को मानव धर्म का पाठ पढ़ाया। परंपरागत पुरुष प्रधान संस्कृति की बेड़ियों में जकड़ी मराठी संस्कृति की नारियों ने इन संत महात्माओं की ज्ञानवाणी का खुले ह्रदय से स्वागत किया। इसीलिए मराठी स्त्री गीतों में महाराष्ट्र के प्रसिद्ध ज्ञानेश्वर, तुकाराम, नामदेव, एकनाथ और रामदास स्वामी इनकी शिक्षा के प्रमाण अधिक मात्रा में मिलते हैं।

महाराष्ट्रीय लोकसंगीत का झुकाव अध्यात्म की ओर ज्यादा दिखाई देता है। जो महाराष्ट्र में प्रचलित भागवत धर्मपंथ का प्रभाव स्वरूप है। महाराष्ट्रीय संतकवी अपने अभंगों, भजन–कीर्तन द्वारा लोगों के मन में धार्मिक श्रद्धा और दिव्य भक्ति की प्रेरणा को प्रज्वलित करते थे। संगीत के प्रभावी साधन से मानव ईश्वर के निकट पहुंच सकता है और मोक्ष काद्वार खुल सकता है, यह विश्वास महाराष्ट्र के संतों के विचारों ने साधारण जनता को दिया। मानव के सत्कर्म उसे उसके आराध्य तक पहुंचा सकते हैं। भक्ति रस में डूबा संगीत मनुष्य को जन्म–मृत्यु के फेरों से मुक्त कर सकता है। संगीत से ईश्वर का साक्षात्कार संभव है। प्रकृति के अनाहत नाद से आत्मिक नाद जोड़कर आत्मा को परमात्मा में विलीन करने का सर्वोत्कृष्ट माध्यम भक्ति की आराधना है। भजन, कीर्तन, पौराणिक कथा गायन, ईश्वर स्तुति के गीत यह माध्यम हो सकते हैं। ऐसी अध्यात्मिक सीख मराठी संतों की साहित्यों और उनके ईश्वर भक्ति में उपस्थित थी, जिसका प्रभाव जनसामान्य पर होने के लगा था। मराठी संत परंपरा में जाति व्यवस्था के उच्च स्तर से लेकर निचले स्तर के संतों का समावेश है, जिसका प्रमाण मराठी संतो ने अपने साहित्य में स्वयं भी दिया है। लोकगीतों में भी यह वास्तविकता स्पष्ट होती है। महाराष्ट्र के प्रसिद्ध संत कवि चोखामेळा जो जाति व्यवस्था के सबसे नीचे के स्तर से आते हैं। उन्होंने अपनी रचना में कहा है, हे ईश्वर हीन जाति के कारण समीप न आकर सेवा नहीं कर सकता क्योंकि अछूत का मंदिर में प्रवेश वर्जित है।

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
ISSN 2320–7175 | Volume 09, Issue 01, June 2021
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2021
UGC CARE listed Journal

हीन याती माझी देवा कशी घडेल तुझी सेवा

मज दूर दूर हो म्हणतीतुझं भेटू कवण्या रिती (भवालकर, 1990 पृ.124.)

अगली पंक्तियों में लोकगीत इस बात की पुष्टि करता है। विट्ठल मंदिर में पूजा करते वक्त स्त्री कहती है, मेरा यह चौथा दंडवत नामदेव जहां समाधिस्थ हुए, मंदिर की उस सीढ़ि को समर्पित है। मेरे लिए वह जगह भी पवित्र है जहां से चोखामेला ईश्वर को दर्शन देने के लिए खुद बाहर आने को कह रहा है। क्योंकि उसे मंदिर के अंदर आने का अधिकार नहीं है। जैसे ईश्वर के लिए सब भक्त एक समान है। मेरे लिए भी संत नामदेव की भांति चोखा मेला भी सम्माननीय है।

माझ्या चौथा माझा दंडवत नामदेवाच्या पायरी

हाक मारतो विठ्ठलाला चोखामेळा तो बाहेरी (बाबर, 1977 पृ.12.)

यही मानवता का समभाव, जाति निरपेक्ष भक्ति, विचारों का आध्यात्मिक पहलू मराठी लोकगीतों की विशेषता दिखाती है। मराठी संगीत में भक्ति रस इतना घुल चुका था कि राधा कृष्ण के श्रृंगार गीतों मे भी भक्ति की अलौकिक धारा प्रवाह मान दिखाई देती है और कृष्ण की बाल लीलाएं अध्यात्म का सार समझाती है।

ज्याच्या नावे होती संसारात मुक्त

यशोदा बांधीत त्याला दावे (सानेगुरुजी, 2011 पृ.230.)

अर्थ–जिस श्री कृष्ण के केवल नाम स्मरण से ही व्यक्ति का उद्धार होता है। जिसके कारण सांसारिक कष्टों से मुक्ति मिलती है। उस कृष्ण की बाल्यावस्था में उसकी चपलता से, नटखट वृत्ति से परेशान मां यशोदा उसे खूंटे से बांध कर रखती है, जो सब को मुक्त कर सकता है, उसे कौन बांध कर रख सकता है।

महाराष्ट्र में जनसाधारण के जीवन में बसा वैष्णव पंथी भागवत धर्म मराठी लोक संस्कृति का विशेष है। पांडुरंग की भक्ति आराधना इस पंथ की मुख्यधारा है। पंढरपुर मराठी संस्कृति की 'काशी' मानी जाती है। मराठवाड़ा की पावन धरती पर बहने वाली गोदावरी गंगा जैसी पवित्र नदियाँ पावन कहलाती है। महाराष्ट्र के लोकगीतों में पंढरपुर के आराध्य विष्णु के अवतार पांडुरंग और उनकी पटरानी रुकमणी के विवाह से लेकर विरह तक के हर एक क्षण का वर्णन मिलता है। इन गीतों में महाभारत पर आधारित कृष्ण के अद्वितीय व्यक्तिमत्व की, कृष्ण द्वारा बताए गए गीतोंपदेश की झलकियां मिलती है। महाकाव्यों पर आधारित लोकगाथा, उनका गायन तथा पौराणिक कथाओं से प्रेरित होकर की गई रचनाएं मराठी लोकगीतों की एक उल्लेखनीय विशेषता है। मराठी लोक संस्कृति के स्त्रियों ने पौराणिक कथाओं से प्रेरित होकर अपने जीवन में सावित्री, सीता, रुक्मणी, पार्वती इनके आदर्शो को अपनाया और उनकी जीवन पर आधारित प्रसंगो को स्वरों में भी ढाला।

सावित्रीचे व्रत करावे पवित्र

एकावे चरित्र सावित्रीचे (सानेगुरुजी, पृ.218.)

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
ISSN 2320–7175 | Volume 09, Issue 01, June 2021
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2021
UGC CARE listed Journal

यमराज से लड़कर अपने पति को मृत्युलोक से वापस लाने वाली सावित्री के पतिव्रत धर्म के आदर्श पर आधारित अगली पंक्तियों में चक्की पर आटा पीसते हुए अपने दुखों से पीड़ित नारी कहती है, सांसारिक दुखों से थकना तुझे शोभा नहीं देता क्योंकि यहां तो सीता जैसी पवित्र नारी को भी बनवास का कष्ट उठाना पड़ा।

सरले दळण दळून दमलीस

सीतेला ही होई संवसारी वनवास (सानेगुरुजी, पृ.314.)

महाराष्ट्रीय लोकसंगीत की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि, उसका एक रूप राष्ट्रीय संगीत है। महाराष्ट्र के पांच प्रादेशिक रचना और बोली भाषाओं पर आधारित लोकगीतों में राष्ट्रीय एकता का रूप दिखाई देता है। महाराष्ट्रीय लोकगीतों में मानव की संकीर्ण विचार पद्धति नहीं मिलती बल्कि उसमें मानवता का राष्ट्रीय रूप प्रतिबिंबित होता दिखाई देता है। महाराष्ट्रीय लोकगीतों में सभी धर्मों का आदर देने वाले लोकगीत मिलते हैं। एक दूसरों की परंपराओं के प्रति आदर दिखाई देता है। सहज सहचर्य और भारतीय संस्कृति का अभिमान गीतों में झलकता है। अपने धर्म के साथ बाहर से आए धर्म का सम्मान करना चाहिए यह हिंदू संस्कृति की सीख है। महाराष्ट्र के खानदेश कहे जाने वाले प्रादेशिक विभाग से यह लोकगीत पंक्ति है, जहां शब्दों में पिरोया गया हिंदू धर्म का अभिमान इस्लाम धर्म को सम्मान दे रहा है। (अहिरानी बोली) अपनी मुसलमान सखी के माथे पर टीका ना लगाने के नियम को खुले ह्रदय से सन्मान दे रही है। रूढ़ीवादी लोक संस्कृति की भारतीय नारी जिसके लिए सुहाग का टीका ही सब कुछ होता है। (फकीरनी/ मुसलमान)

सई बहीण करू, करूफकीरनीगिरजा

कपायानाकुकु हिना रामनी वरजा (पाटिल, 1990 पृ.191.)

भारतीय संस्कृति कला का आदर करती है। गीत, संगीत को आत्मिक उन्नति का साधन मानती है। मराठी लोकगीतों ने भी इस परंपरा को सदियों से अंगीकृत किया है जो गीतों से स्पष्ट होता है।

मराठा काल की अगर बात करें तो यह बात स्पष्ट होती है कि, लड़ाकू मराठा केवल युद्धों के ही प्रणेता नहीं थे। तो उन्हें भारतीय संगीत का भी अभिमान था। इतिहास बतलाता है कि, शिवाजी महाराज के राज्याभिषेक के अवसर पर सप्ताह भर गीत–संगीत का आयोजन किया गया था, जिसके कलाकार, गायक, वादक सभी लोककला के कलाकार थे और उसमें अन्य भाषाओं के कलाकारों का भी समावेश था। पोवाडा, लावणी, भजन, कीर्तन, लोकगाथागान, लोकगीत इन सभी का भरपूर आयोजन किया गया था। कहां जाता है की, यह सारे गीत शिवाजी की स्तुति और यशोगान पर आधारित थें जो मुख्यतः भैरव राग में गाए गए। (जोशी, 1957 पृ.304.)

भारतीय संगीत में मराठी लोकगीतों का योगदान

संगीत की परिभाषा करते हुए कहा जाता है, गायन, नृत्य और नाट्य कला का एकत्रित सादरीकरण संगीत है। लोकगीत परंपरा में वार्षिक त्योहारों पर आधारित नृत्यगीत और खेल नृत्यगीत प्रसिद्ध है, जो इस परंपरा का निर्वाह करते हैं। महाराष्ट्रीय लोकगीतों में पिंगा, फुगड़ी, जिम्मा, फेर के गाने यह नृत्य– खेलगीत प्रसिद्ध है। जहां सूर, ताल, लय का विशेष ध्यान रखा जाता है।

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
ISSN 2320–7175 | Volume 09, Issue 01, June 2021
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2021
UGC CARE listed Journal

माझा पिंगा ग ऽ जातो म्हमई ऽऽ, आणतोसमईऽ पोरी पिंगा ऽऽ

तुझ्या पिंग्याची ऽ माझ्या पिंग्याची ऽऽ, उतरा दिष्ट गऽ पोरी पिंगा ग पोरी पिंगा

(बाबर, श्रावण भाद्रपद , 1968 पृ.26.)

पिंगा गीत गाते वक्त नृत्य का उत्कृष्ट प्रदर्शन हो रहा है इसलिए किसी की नजर लग सकती है। नजर उतारने के लिए मुंबई से दीया मंगवाया जा रहा है।

पुरुष गीतों में उगते सूरज के साथ गांव की दहलीज पर फेरा लगाने वाला वासुदेव रंग–बिरंगी वेशभूषा करता है। उसकी प्रस्तुति में गीत, नृत्य और वादन का प्रदर्शन होता है। यह कथागीत भक्ति और अध्यात्म पर आधारित होते हैं। भिक्षा की याचना करते हुए वासुदेव दानपुण्य की महिमा का गान करता है।

वासुदेव आला ओ वासुदेव आला, दान द्या त्याला दान द्या त्याला

दानासारख पुण्य नाही हो, दात्याला कशाचंच भान नाही हो (कोली, 2005 पृ.35.)

भक्तिगीतों में पारंपारिक वाद्यो का उपयोग संगीत की परंपरा का निर्वाह करता है। जिसमें तंबूरा, झांझ, लेझिम चिमटा, ढोलक, इकतारा, मृदंग प्रसिद्ध है। मराठी संगीत में हिंदुत्व की पवित्र गौरवगाथा का चित्रण मिलता है। हिंदू संस्कृति की पवित्रता का विशेष ध्यान रखा गया है। भारतीय संस्कृति में वाद्य संगीत को मानव की आत्मा का प्रतिरूप माना है। मानव चरित्र को उच्चतम बनाने के लिए संगीत के माध्यम का प्रयोग मराठी लोकसंगीत की विशेषता है, जिसका भारतीय संगीत पर विशेष प्रभाव रहा है, जो द्वैतवाद भारतीय संगीत की आत्मा है उसका सहज प्रयोग मराठी लोकगीतों में प्रायः दिखाई देता है। मराठी लोकगीतों में अनपढ़ नारियों के गानों में भी अध्यात्म के पाठ मिलते हैं। वैवाहिक संसार को चलाने के लिए पति और पत्नी का नाता एक ही रथ के दो पहिए जैसे होते है। एक दूसरे के बिना अधूरा, जैसे ईश्वर और भक्त का नाता, सगुण और निर्गुण का नाता एक दूसरे पर निर्भर होता है।

पती–पत्नीचं नातं द्वैताचं–अद्वैताचं,

एका रथाची चाकं, दोघ असती (कालभूत, 2007 पृ.139.)

भारतीय संगीत रसप्रधान है। सभी रागरागिनी मानव के आंतरिक भावों पर आधारित है। संगीत का मानव से जो आत्मिक संबंध है। वह प्रकट करने के लिए अपने शब्दों को सुरताल में पिरोकर गीत गाया जाता है। यह गाते वक्त मनुष्य के हृदय की पीड़ा, हर्ष, उल्लास, वात्सल्य, प्रीति, अभिमान इन सब का शाब्दिक रूप सामने आता है। जो व्यक्ति के मन में उस समय उठ रहे रसों को अर्थात भावनाओं को दर्शाता है। यही भावनाएं काव्यशास्त्र में रस कहलाती है और संगीत के सुरों का आधार मानी जाती है। शास्त्रीय भाषा में इसे मनुष्य की स्थिर व शाश्वत भावनाओं का स्थायी भाव कहा जाता है। यह स्थायी भाव उत्साह, शोक, रति, हास्य, भय, विस्मय आदि है। इन्हीं के कारण मानव के मन में रसों की उत्पत्ति होती है। (नाट्य शास्त्र के अनुसार)

मराठी लोकगीतों की श्रेणी में समाविष्ट शिशु गान वात्सल्य, ममता के शांत रस में रचित है। विवाह संस्कार, गर्भाधान संस्कार, मखर गान श्रृंगार रस पर ज्यादातर गाए जाते हैं। पुरुषगीत वीररस पर आधारित होते हैं। स्त्री

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
ISSN 2320–7175 | Volume 09, Issue 01, June 2021
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2021
UGC CARE listed Journal

पुरुषों के उपासना गीत भक्तिरस में गाए जाते हैं। मराठी लोकगीतों में अध्यात्मिक गीतों का चलन ज्यादा है जोकि भक्ति रस, अद्भुत रस पर आधारित होते हैं।

निष्कर्ष

मराठी लोकगीत परंपरा केवल साहित्यिक दृष्टि से ही महत्वपूर्ण नहीं है। यह लोक गीत सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक, ऐतिहासिक, धार्मिक और कला के क्षेत्र में भी महत्व रखते हैं। मराठी लोकसंगीत का प्रभाव खासतौर भारतीय संगीत पर विशेषता दिखाई देता है। मराठी लोकगीतों में प्रायः राष्ट्रीय एकता की भावना प्रखरता से दृष्टिगोचर होती है, जो भारतीय संस्कृति की मानवतावादी चेतना का समर्थन करती है। भक्ति, अध्यात्म, समर्पण, वीर रस के गीत यह मराठी लोकगीतों की विशेषताएं है जिनका भारतीय संगीत परंपरा पर प्रभाव रहा है। भारतीय संगीत की उच्चतम कोटि को बनाए रखने में मराठी लोकसंगीत का उल्लेखनीय योगदान रहा है। लोकगीतों केगायन के प्रकार और पद्धति, राग और विधाएं भले ही शास्त्रीय संगीत से भिन्न है किंतु मराठी लोकगायकों ने, सर्वसाधारण जनमानस ने भारतीय संगीत की विशेषताओं का विशेष ध्यान रखा है। भोर के समय मंदिर में ईश्वर को जगाने वाली शास्त्रशुद्ध भूपाली और चक्की पर आटा पीसते समय उगते सूरज की आराधना एक ही भावना से प्रेरित दिखाई देती है। सांझ ढले तुलसी वृंदावन में दीया जलाते वक्त ईश्वर का धन्यवाद देने वाली गीतों की पंक्तियां दीपक राग से कम नहीं होती, वर्षा ऋतु के उत्सव गीत, खेलनृत्य गीत मेघ मल्हार जैसे बरसते हैं। वसंत ऋतु में बसंत बहार कृषि गीतों मैंरब्बी के धानों को सहलाता है।वीर पुरुषों के यशगान में राग भैरव दुंदुभी बजाता है। भक्ति के गानों में शांति का रस बहता है। राधाकृष्ण के प्रेम में कजरी महकती है। महाराष्ट्र के आदिवासियों के नृत्यगीतों में दादरा, केरवा, खामटा ताल पकड़ते हैं। मराठी लोकगीतों की प्राचीन परंपरा बनाए रखने वाली ओवी कहरवा ताल में गूंजती है, आरोह अवरोह को साथ लेकर चलती है। ध्रुपद और अंतरे के बीच के अंतर को नापती है। अनाज पीसना खत्म होने पर ईश्वर का धन्यवाद देते हुए ज्ञानेश्वर महाराज की तरह पसायदान भी गाती है। जो कि विश्वशांति के लिए, संपूर्ण मानव जाति के उद्धार के लिए प्रभु की याचना करने का अप्रतिम उदाहरण है। नृत्य, गायन, वाद्य, नाट्य इन सारी कलाओं से परिपूर्ण, उच्चविचार धारा से परिष्कृत महाराष्ट्रीय लोकसंगीत भारतीय संगीत परंपरा में अपना योगदान दर्शाते हुए मानवता का पाठ पढ़ाता है और राष्ट्रीय एकता की प्रेरणा देता है।

संदर्भ ग्रंथ

कालभूत, पुरुषोत्तम. (2007). लोकसाहित्य :स्वरूप आणि विवेचन. विजय प्रकाशन, नागपुर
कोली, विट्ठल. (2005). महाराष्ट्रातील लोकगीते . औरंगाबाद : साकेत प्रकाशन।
जोशी, उमेश. (1957). भारतीय संगीत का इतिहास . फिरोजाबाद : मानस सरोवर प्रकशन महाल।
पाटिल, कृष्णा. (1990). अहिरानी लोकसाहित्य दर्शन,मुंबई : महाराष्ट्र राज्य साहित्य आणि समिति मंडल।
बाबर, सरोजिनी. (1968). श्रावण भाद्रपद, मुंबई : महाराष्ट्र राज्य शिक्षण समिति।
बाबर, सरोजिनी. (1977). विट्ठल रुक्मिणी, मुंबई :महाराष्ट्र राज्य लोकसाहित्य समिति।
भवालकर, तारा. (1990). लोकसाहित्यतील स्त्री प्रतिमा, पुणे : सुगावा प्रकाशन।
सानेगुरुजी. (2011). स्त्री जीवन, कोल्हापुर : रीया पब्लिकेशन।